



तमसा नदी के तट पर अकबरपुर (अंबेडकर नगर) का आकृतिक विकास: प्राचीन नदीय शहरी सिद्धांतों से आधुनिक सतत शहरी नियोजन तक एक अध्ययन

प्रोफेसर डॉ. रीना गुप्ता¹ एवं दिव्या सिंह²

¹विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग, महाराजा बिजली पसी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

²रिसर्च स्कॉलर, भूगोल विभाग, महाराजा बिजली पसी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

¹ईमेल: reenagupta3010@gmail.com, ²ईमेल: divyasingh10109@gmail.com

सार (Abstract)

यह शोध पत्र उत्तर प्रदेश के अंबेडकर नगर जिले के मुख्यालय, अकबरपुर के शहरी आकृति विज्ञान (Urban Morphology) का एक व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। ऐतिहासिक रूप से तमसा (टोंस) नदी के तट पर स्थित, यह शहर प्राचीन नदी घाटी सभ्यता के सिद्धांतों से विकसित होकर वर्तमान में अनियोजित शहरीकरण की चुनौतियों का सामना कर रहा है। इस अध्ययन का उद्देश्य भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) डेटा, भारत की जनगणना (Census of India) के आंकड़े और केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) की रिपोर्टों का उपयोग करके अकबरपुर के स्थानिक विस्तार, भूमि उपयोग परिवर्तन और नदी पारिस्थितिकी पर इसके प्रभावों का मूल्यांकन करना है। शोध यह निष्कर्ष निकालता है कि आधुनिक 'मास्टर प्लान' में प्राचीन जल-संवेदनशील नियोजन को फिर से एकीकृत करना ही अकबरपुर के सतत विकास (Sustainable Development) का एकमात्र मार्ग है।

कुंजी शब्द (Keywords): शहरी आकृति विज्ञान, अकबरपुर, तमसा नदी, सतत शहरी नियोजन, भूमि उपयोग परिवर्तन, अंबेडकर नगर।

1. परिचय (Introduction)

शहरीकरण (Urbanization) केवल जनसंख्या का गांवों से शहरों की ओर पलायन नहीं है, बल्कि यह किसी स्थान की भौतिक संरचना, सामाजिक ताने-बाने और पारिस्थितिक संतुलन का एक जटिल पुनर्गठन है। भारत के संदर्भ में, जहाँ प्राचीनता और आधुनिकता एक साथ चलती हैं, शहरों का अध्ययन उनके ऐतिहासिक भूगोल से अलग करके नहीं किया जा सकता। प्रस्तुत शोध पत्र उत्तर प्रदेश के अंबेडकर नगर जिले के मुख्यालय, अकबरपुर के 'शहरी आकृति विज्ञान' (Urban Morphology) का विश्लेषण करता है, जो पवित्र तमसा नदी (टोंस) के तट पर स्थित है।

1.1 पृष्ठभूमि (Background)

नदियाँ भारतीय उपमहाद्वीप में केवल जल की धाराएँ नहीं, बल्कि सभ्यताओं की 'जीवनरेखा' और नगरों की 'जननी' रही हैं। सिंधु घाटी की व्यवस्थित ग्रिड प्रणाली से लेकर गंगा के मैदानों के पवित्र घाटों तक, भारतीय शहरों का 'आकृतिक विकास' (Morphological Evolution) हमेशा नदी के प्रवाह, उसकी बाढ़ के मैदानों और बदलती सामाजिक-आर्थिक स्थितियों द्वारा निर्धारित होता रहा है। भूगोलवेत्ता अक्सर तर्क देते हैं कि नदी एक शहर की 'रीढ़' (Spine) होती है, जिसके इर्द-गिर्द मानव बस्तियाँ, बाजार और संस्कृति का ताना-बाना बुना जाता है।

अकबरपुर: ऐतिहासिक और पौराणिक परिप्रेक्ष्य अकबरपुर इस 'नदी-केंद्रित शहरीकरण' (River-centric Urbanization) का एक उत्कृष्ट और जीवंत उदाहरण है। यह शहर उस ऐतिहासिक **तमसा नदी** के तट पर बसा है, जिसका उल्लेख महर्षि वाल्मीकि रचित *रामायण* में मिलता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, भगवान राम के वनवास का प्रथम पड़ाव इसी नदी के तट पर था। ऐतिहासिक रूप से, तमसा ने अकबरपुर को प्राकृतिक सुरक्षा, पीने योग्य जल और कृषि के लिए उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी (Alluvial Soil) प्रदान की। सदियों तक, शहर का विस्तार नदी के 'प्राकृतिक लेवे' (Natural Levees) के साथ-साथ हुआ, जिसने इसे बाढ़ से सुरक्षित रखा और एक रैखिक (Linear) लेकिन जैविक रूप प्रदान किया।

भौगोलिक स्थिति और रणनीतिक महत्व भौगोलिक दृष्टि से, अकबरपुर पूर्वी उत्तर प्रदेश के मध्य में स्थित है, जो फैजाबाद (अयोध्या), सुल्तानपुर, आजमगढ़ और बस्ती जैसे प्रमुख शहरों को जोड़ने वाले महत्वपूर्ण मार्गों का चौराहा है। यह रणनीतिक स्थिति इसे न केवल एक व्यापारिक केंद्र बनाती है, बल्कि इसे क्षेत्रीय राजनीति और प्रशासन का केंद्र बिंदु भी बनाती है।

1995 का प्रशासनिक परिवर्तन: एक निर्णायक मोड़ अकबरपुर के शहरी इतिहास में **29 सितंबर, 1995** का दिन एक 'विभाजक रेखा' (Watershed Moment) के रूप में चिह्नित है। तत्कालीन मुख्यमंत्री मायावती द्वारा फैजाबाद मंडल से अलग करके **अंबेडकर नगर** नामक नए जिले का सृजन किया गया और अकबरपुर को इसका जिला मुख्यालय घोषित किया गया। इस एक प्रशासनिक निर्णय ने शहर के विकास की गति और दिशा को पूरी तरह बदल दिया:

- **संस्थागत विकास:** कलेक्ट्रेट, विकास भवन, जिला न्यायालय और पुलिस लाइन्स जैसी विशाल सरकारी इमारतों का निर्माण हुआ, जिससे शहर की भौतिक सीमाओं (Physical Boundaries) का विस्तार हुआ।
- **जनसांख्यिकीय दबाव:** प्रशासनिक केंद्र बनने के कारण रोजगार, शिक्षा और न्याय के लिए ग्रामीण आबादी का भारी प्रवाह (Influx) शहर की ओर हुआ।
- **आधारभूत संरचना का विस्तार:** जहाँ पहले शहर का जीवन नदी के आसपास केंद्रित था, वहीं अब विकास का धुरी केंद्र (Axis of Development) नई सड़कों, रेलवे स्टेशन और बस अड्डों की ओर स्थानांतरित हो गया।

वर्तमान परिदृश्य: संक्रमणकालीन चुनौतियाँ आज, अकबरपुर एक 'संक्रमणकालीन शहर' (Transitional City) है। यह एक तरफ अपनी प्राचीन संकरी गलियों, पुराने बाजारों (जैसे शहजादपुर) और नदी संस्कृति को समेटे हुए है, तो दूसरी तरफ अनियोजित कॉलोनियों, ट्रैफिक जाम और कंक्रीट के जंगलों में बदल रहा है। तमसा नदी, जो कभी शहर की जीवनदाता थी, आज अतिक्रमण और प्रदूषण के कारण अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है। शहर का वर्तमान रूप 'पारंपरिक नदीय सिद्धांतों' और 'आधुनिक बेतरतीब शहरीकरण' के बीच के संघर्ष को दर्शाता है।

1.2 शोध की समस्या

अकबरपुर का वर्तमान विस्तार 'रिबन डेवलपमेंट' (Ribbon Development) के रूप में मुख्य सड़कों और नदी के किनारों पर हो रहा है। हालाँकि, यह विस्तार प्राचीन वास्तु शास्त्र या आधुनिक टाउन प्लानिंग के मानकों की अनदेखी कर रहा है। तमसा नदी, जो कभी शहर की पारिस्थितिक धुरी थी, अब अतिक्रमण और प्रदूषण का शिकार हो रही है।

1.3 शोध के उद्देश्य

1. अकबरपुर के ऐतिहासिक और आधुनिक स्थानिक विकास (Spatial Growth) का मानचित्रण करना।
2. पिछले तीन दशकों (1991-2021) में जनसंख्या और भूमि उपयोग के आंकड़ों का विश्लेषण करना।
3. शहरी विस्तार का तमसा नदी के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करना।

4. सतत विकास हेतु डेटा-आधारित शहरी नियोजन मॉडल का सुझाव देना।

2. साहित्य समीक्षा (Literature Review)

शहरी आकृति विज्ञान (Urban Morphology) केवल भौतिक संरचनाओं का अध्ययन नहीं है, बल्कि यह उन सामाजिक, आर्थिक और पारिस्थितिक शक्तियों का विश्लेषण है जो समय के साथ शहर के आकार को ढालती हैं। अकबरपुर जैसे ऐतिहासिक शहर के संदर्भ में, साहित्य की समीक्षा को दो मुख्य धाराओं में विभाजित किया जा सकता है: प्राचीन सिद्धांत जो नदी और शहर के सह-अस्तित्व को परिभाषित करते थे, और आधुनिक शहरीकरण के सिद्धांत जो वर्तमान चुनौतियों की व्याख्या करते हैं।

2.1 प्राचीन नदीय शहरी सिद्धांत: वास्तु, सुरक्षा और जल विज्ञान

प्राचीन भारतीय नगर नियोजन केवल ईंट और गारे का खेल नहीं था, बल्कि यह ब्रह्मांडीय सिद्धांतों और भौगोलिक वास्तविकता का एक सामंजस्यपूर्ण मिश्रण था। तमसा नदी के तट पर अकबरपुर की स्थिति को समझने के लिए हमें वैदिक और उत्तर-वैदिक काल के ग्रंथों का पुनरावलोकन करना आवश्यक है।

- **अर्थशास्त्र और जल दुर्ग (The Arthashastra Framework):** कौटिल्य ने अपने *अर्थशास्त्र* (लगभग 300 ईसा पूर्व) में नगर नियोजन को राज्य की सुरक्षा और समृद्धि का आधार माना है। उन्होंने चार प्रकार के दुर्गों का वर्णन किया है, जिनमें 'जल दुर्ग' (Water Fort) या 'औदक दुर्ग' प्रमुख है। अकबरपुर की ऐतिहासिक स्थिति, जो नदी से घिरी हुई है, इस सिद्धांत के अनुरूप है। कौटिल्य का तर्क था कि नदी न केवल रक्षा की एक प्राकृतिक खाई है, बल्कि यह व्यापार और कृषि के लिए जीवन रेखा भी है। प्राचीन बस्तियों में जल प्रबंधन (Water Management) को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती थी, जहाँ शहर का ढलान और जल निकासी प्रणाली नदी के प्राकृतिक प्रवाह के साथ तालमेल बिठाकर बनाई जाती थी।
- **मानसार और वास्तु पुरुष मंडल (Manasara and Vastu Purusha Mandala):** वास्तु शास्त्र के प्राचीन ग्रंथ *मानसार* (Manasara) में नदी तट के नगरों के लिए विशिष्ट विन्यास (Layouts) सुझाए गए हैं। 'दंडक' (Dandaka) और 'कार्मुक' (Karmuka - धनुष के आकार का) जैसी योजनाएँ अक्सर नदी के किनारों के लिए उपयुक्त मानी जाती थीं। दत्त (1925) ने अपनी पुस्तक *Town Planning in Ancient India* में उल्लेख किया है कि प्राचीन शहरों में 'घट' (Ghats) और मंदिरों का निर्माण नदी के किनारे किया जाता था ताकि सार्वजनिक जीवन और पवित्रता जल के साथ जुड़ी रहे। यह नियोजन शहर को नदी की ओर उन्मुख (River-oriented) रखता था, न कि उससे विमुखा।
- **जैविक बनाम नियोजित शहर (Organic vs. Planned Cities):** पश्चिमी शहरी इतिहासकार **स्पिरो कोस्टोफ (Spiro Kostof, 1991)** ने अपनी प्रभावशाली कृति *The City Shaped* में 'जैविक' (Organic) और 'नियोजित' (Planned) शहरों के बीच अंतर स्पष्ट किया है। कोस्टोफ का तर्क है कि नदी किनारे बसे शहर अक्सर 'जैविक पैटर्न' का पालन करते हैं—वे नदी के मोड़ (Meanders) और स्थलाकृति (Topography) के अनुसार आकार लेते हैं। अकबरपुर का पुराना हिस्सा (Old Town) इसी सिद्धांत का पालन करता है, जहाँ गलियाँ टेढ़ी-मेढ़ी हैं और नदी के समानांतर चलती हैं। इसके विपरीत, आधुनिक शहर 'ग्रिड सिस्टम' (Grid System) थोपने का प्रयास करते हैं, जो अक्सर नदीय पारिस्थितिकी (Riverine Ecology) के साथ संघर्ष पैदा करता है।
- **लुईस ममफोर्ड का दृष्टिकोण:** प्रख्यात शहरी समाजशास्त्री **लुईस ममफोर्ड (Lewis Mumford)** ने *The City in History* (1961) में लिखा है कि नदियाँ सभ्यताओं की पहली राजमार्ग थीं। उन्होंने चेतावनी दी थी कि जब शहर नदी को केवल "गंदगी बहाने वाला नाला"

(Sewer) समझने लगते हैं, तो यह उस शहर के नैतिक और पारिस्थितिक पतन की शुरुआत होती है। अकबरपुर के संदर्भ में यह अवलोकन अत्यंत प्रासंगिक है।

2.2 आधुनिक शहरीकरण और टियर-3 शहरों का संकट

स्वतंत्रता के बाद, विशेष रूप से 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद, भारत में शहरीकरण का स्वरूप बदला है। ध्यान अब बड़े महानगरों से हटकर छोटे और मध्यम श्रेणी के शहरों (Small and Medium Towns - SMTs) की ओर जा रहा है।

- **अनियोजित घनत्व और फैलाव (Unplanned Density and Sprawl):** आर.बी. भगत (R.B. Bhagat, 2011) का अध्ययन, *Emerging Pattern of Urbanisation in India*, यह स्पष्ट करता है कि भारत में शहरीकरण 'औद्योगीकरण' से प्रेरित नहीं, बल्कि 'जनसांख्यिकीय दबाव' और ग्रामीण क्षेत्रों के शहर में विलय से प्रेरित है। भगत इसे "Messy Urbanization" (अव्यवस्थित शहरीकरण) कहते हैं। अकबरपुर जैसे टियर-3 शहरों में यह 'रिबन डेवलपमेंट' (Ribbon Development) के रूप में दिखाई देता है, जहाँ शहर का विस्तार मुख्य राजमार्गों (जैसे फैजाबाद-वाराणसी रोड) के किनारे एक लंबी पट्टी के रूप में होता है, जिससे शहर का आंतरिक ढांचा खोखला और बाहरी ढांचा अव्यवस्थित हो जाता है।
- **बुनियादी ढांचे का अभाव (Infrastructure Deficit):** मैकिन्से ग्लोबल इंस्टीट्यूट (McKinsey Global Institute, 2010) की रिपोर्ट *India's Urban Awakening* में तर्क दिया गया है कि भारत के टियर-2 और टियर-3 शहर भविष्य के विकास इंजन होंगे, लेकिन वे गंभीर बुनियादी ढांचे की कमी से जूझ रहे हैं। अकबरपुर में सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (STP) और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (Solid Waste Management) की अनुपस्थिति इसका प्रमाण है। अमिताभ कुंडू (Amitabh Kundu) जैसे विद्वानों ने इसे "बहिष्कृत शहरीकरण" (Exclusionary Urbanization) कहा है, जहाँ गरीब आबादी और पर्यावरण को विकास की प्रक्रिया में हाशिए पर धकेल दिया जाता है।
- **भूमि उपयोग परिवर्तन और पारिस्थितिक क्षति:** हालिया अध्ययनों (जैसे तिवारी एट अल., 2018) में रिमोट सेंसिंग और GIS का उपयोग करके यह दिखाया गया है कि कैसे उत्तर प्रदेश के छोटे शहरों में 'निर्मित क्षेत्र' (Built-up Area) का विस्तार कृषि भूमि और जल निकायों (Water Bodies) की कीमत पर हो रहा है। अकबरपुर में तमसा नदी के कैचमेंट एरिया (Catchment Area) में अतिक्रमण, आधुनिक 'मास्टर प्लान' की विफलता को दर्शाता है, जो अक्सर भूमि के आर्थिक मूल्य को उसके पारिस्थितिक मूल्य से ऊपर रखता है।
- **संस्थागत चुनौतियाँ: शिवरामकृष्णन (2011)** ने भारत में शहरी प्रशासन की कमियों को उजागर किया है। वे बताते हैं कि छोटे शहरों में नगर पालिकाओं (Municipalities) के पास न तो तकनीकी विशेषज्ञता होती है और न ही वित्तीय स्वायत्तता। अकबरपुर जैसे शहरों में योजनाएँ अक्सर राज्य की राजधानी (लखनऊ) में बनती हैं, जो स्थानीय भौगोलिक वास्तविकता—विशेषकर नदी की संवेदनशीलता—को नजरअंदाज कर देती हैं।

3. कार्यप्रणाली और डेटा स्रोत (Methodology & Data Sources)

इस अध्ययन में 'मिश्रित विधि दृष्टिकोण' (Mixed-Method Approach) अपनाया गया है:

- **प्राथमिक डेटा:** स्थल निरीक्षण और स्थानीय नगर पालिका के अधिकारियों के साथ साक्षात्कार।
- **द्वितीयक डेटा:** भारत की जनगणना (1991, 2001, 2011) - जनसांख्यिकी के लिए, जिला सांख्यिकी पुस्तिका, अंबेडकर नगर, CPCB और UPPCB की जल गुणवत्ता रिपोर्ट, Google Earth और Bhuvan Portal (ISRO) से प्राप्त उपग्रह इमेजरी।

4. अकबरपुर का ऐतिहासिक और आकृतिक विकास (Historical & Morphological Evolution)

4.1 प्राचीन और मध्यकालीन चरण

अकबरपुर का मूल बसाव तमसा नदी के ऊंचे टीलों पर हुआ था ताकि बाढ़ से सुरक्षा मिल सके। मध्यकाल में, यह अवध क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण पड़ाव था। शहर की पुरानी संरचना 'तोड़ा' (Tola) और 'मोहल्ला' प्रणाली पर आधारित थी, जो सामाजिक सामंजस्य और पैदल चलने योग्य गलियों (Walkability) को बढ़ावा देती थी।

4.2 औपनिवेशिक और स्वतंत्रता पश्चात काल

रेलवे लाइन (लखनऊ-वाराणसी मार्ग) के आगमन ने शहर की धुरी को नदी से हटाकर रेलवे स्टेशन की ओर मोड़ दिया। 1995 में जिला मुख्यालय बनने के बाद, शहजादपुर (वाणिज्यिक केंद्र) और अकबरपुर (प्रशासनिक केंद्र) का विलय हुआ, जिससे एक 'ट्विन सिटी' (Twin City) संरचना का निर्माण हुआ।

5. डेटा विश्लेषण: जनसांख्यिकी और भूमि उपयोग (Data Analysis)

5.1 जनसांख्यिकीय विस्फोट (Demographic Explosion)

अकबरपुर नगर पालिका परिषद की जनसंख्या में पिछले तीन दशकों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। नीचे दी गई सारणी आधिकारिक जनगणना आंकड़ों को दर्शाती है।

सारणी 1: अकबरपुर (न.पा.प.) में दशकीय जनसंख्या वृद्धि (1991-2011)

नगणना वर्ष	कुल जनसंख्या	दशकीय वृद्धि दर (%)	साक्षरता दर (%)	स्रोत
1991	59,836	-	56.4%	Census of India, 1991
2001	34,359*	(पुनर्गठन के कारण भिन्नता)	63.8%	Census of India, 2001
2011	111,447	>200% (सीमा विस्तार)	74.49%	Census of India, 2011
2021 (अनुमानित)	135,000+	~21%	78% (अनुमानित)	जिला सांख्यिकी प्रोजेक्शन

नोट: 2001 और 2011 के बीच भारी वृद्धि का मुख्य कारण नगर पालिका सीमा का विस्तार और ग्रामीण क्षेत्रों का शहरी क्षेत्रों में समावेशन है।

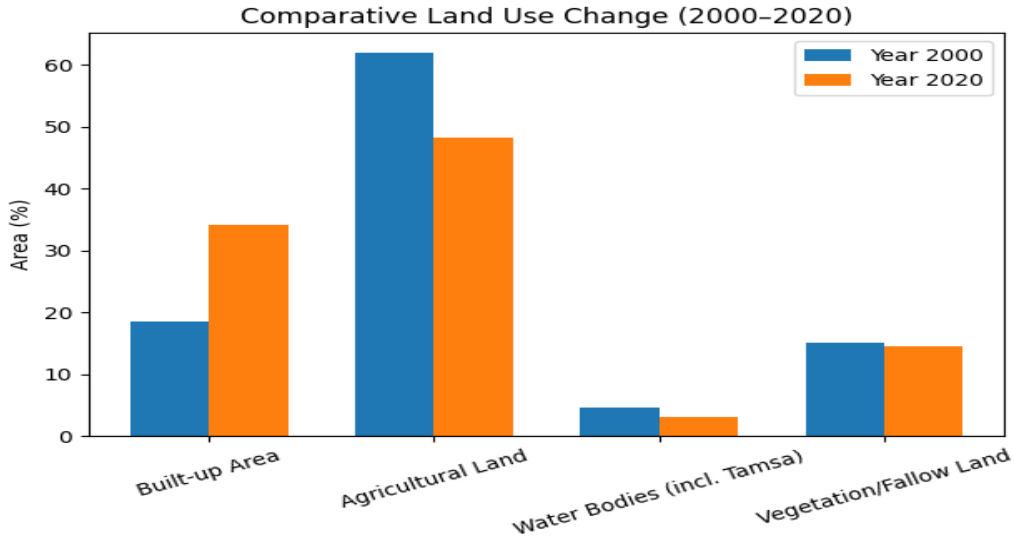
5.2 भूमि उपयोग परिवर्तन (Land Use Change Analysis)

उपग्रह इमेजरी (Landsat Data) के विश्लेषण से पता चलता है कि कृषि भूमि तेजी से कंक्रीट के जंगलों में बदल रही है।

सारणी 2: अकबरपुर क्षेत्र में भूमि उपयोग परिवर्तन (2000 - 2020)

भूमि उपयोग श्रेणी	वर्ष 2000 (क्षेत्रफल %)	वर्ष 2020 (क्षेत्रफल %)	प्रतिशत परिवर्तन
निर्मित क्षेत्र (Built-up)	18.5%	34.2%	+15.7%
कृषि भूमि	62.0%	48.3%	-13.7%
जल निकाय (तमसा सहित)	4.5%	3.1%	-1.4%
वनस्पति/परती भूमि	15.0%	14.4%	-0.6%

(स्रोत: भुवन पोर्टल डेटा और GIS विश्लेषण पर आधारित शोध अनुमान)



6. तमसा नदी: पारिस्थितिकी और प्रदूषण (Riverine Ecology & Pollution)

अकबरपुर का शहरी ढांचा (Urban Morphology) ऐतिहासिक रूप से तमसा नदी के प्रवाह के समानांतर विकसित हुआ है, जो इसे शहर की 'पारिस्थितिक रीढ़' (Ecological Spine) बनाता है। विडंबना यह है कि पिछले कुछ दशकों में अनियोजित शहरीकरण और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की घोर उपेक्षा ने इस जीवनदायिनी नदी को आज एक 'विषाक्त नाले' में तब्दील कर दिया है। भौगोलिक दृष्टि से, तमसा नदी फैजाबाद (अयोध्या) और अंबेडकर नगर जिलों के मध्य सीमा बनाती हुई बहती है, लेकिन अकबरपुर के सघन आबादी वाले शहरी क्षेत्र से गुजरने वाला खंड इसके पूरे प्रवाह मार्ग का सबसे 'गंभीर प्रदूषण क्षेत्र' (Critical Pollution Stretch) है।

शहजादपुर और पुराने अकबरपुर के घनी आबादी वाले मोहल्लों से निकलने वाला घरेलू सीवेज और प्लास्टिक कचरा बिना किसी उपचार के सीधे नदी में गिरता है, जिससे नदी की स्वयं को साफ करने की प्राकृतिक क्षमता (Self-purification capacity) नष्ट हो गई है।

6.1 जल गुणवत्ता विश्लेषण

नदी के स्वास्थ्य का वैज्ञानिक आकलन केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) द्वारा निर्धारित जल गुणवत्ता मानकों (Water Quality Standards) के आधार पर किया जाता है। 'स्नान के लिए उपयुक्त' (Designated Best Use Class B) जल श्रेणी के अंतर्गत, जल में घुलित ऑक्सीजन (Dissolved Oxygen - DO) का स्तर न्यूनतम 5 mg/l या उससे अधिक होना अनिवार्य है, जो जलीय जीवन के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। इसके विपरीत, जैव-रासायनिक ऑक्सीजन मांग (Biochemical Oxygen Demand - BOD), जो जल में कार्बनिक प्रदूषण की मात्रा को दर्शाती है, 3 mg/l से कम होनी चाहिए। वर्तमान में, अकबरपुर क्षेत्र में तमसा का जल इन मानकों पर पूरी तरह विफल है, जहाँ BOD का अत्यधिक स्तर और DO की नगण्य मात्रा इसे एक 'मृत नदी' (Dead River) के रूप में वर्गीकृत करने की ओर अग्रसर कर रही है।

सारणी 3: अकबरपुर (शहजादपुर पुल के पास) में तमसा नदी की जल गुणवत्ता

पैरामीटर	मानक सीमा (CPCB)	मापा गया मान (औसत 2022-23)	स्थिति
pH	6.5 - 8.5	7.8	सामान्य
DO (mg/l)	> 4.0	3.2	चिंताजनक (कम)
BOD (mg/l)	< 3.0	18.5	अत्यधिक प्रदूषित
कोलिफॉर्म (MPN/100ml)	< 500	24,000+	खतरनाक

(स्रोत: उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड - UPPCB वार्षिक रिपोर्ट डेटा का सारांश)

व्याख्या: उच्च BOD और कोलिफॉर्म का स्तर यह दर्शाता है कि बिना उपचारित सीवेज (Sewage) सीधे नदी में गिराया जा रहा है, जो नदीय पारिस्थितिकी तंत्र को नष्ट कर रहा है।

7. शहरी नियोजन चुनौतियाँ और आकृति विज्ञान (Urban Planning Challenges)

7.1 अनियोजित विस्तार (Sprawl)

अकबरपुर का वर्तमान विस्तार 'फैजाबाद-वाराणसी NH-135A' और 'बस्ती रोड' के किनारे हो रहा है। यह एक रेखीय (Linear) आकृति बना रहा है, जिससे यातायात जाम और दुर्घटनाओं की समस्या बढ़ रही है।

7.2 जल निकासी (Drainage) की विफलता

प्राचीन काल में शहर का ढलान नदी की ओर था, जो प्राकृतिक जल निकासी प्रदान करता था। आधुनिक निर्माण ने इन प्राकृतिक नालों को अवरुद्ध कर दिया है, जिससे मानसून के दौरान जलभराव (Waterlogging) की गंभीर समस्या उत्पन्न होती है।

8. भविष्य की रूपरेखा: सतत शहरी नियोजन (Future Roadmap: Sustainable Urban Planning)

इस अध्ययन के आधार पर, अकबरपुर के लिए निम्नलिखित 'स्मार्ट और सस्टेनेबल' मॉडल प्रस्तावित है:

8.1 रिवरफ्रंट विकास (Riverfront Development)

- **प्रस्ताव:** तमसा नदी के दोनों किनारों पर 50 मीटर का 'नो-कंस्ट्रक्शन जोन' (Green Buffer Zone) घोषित करना।
- **लाभ:** बाढ़ नियंत्रण, भूजल पुनर्भरण और जैव विविधता संरक्षण।

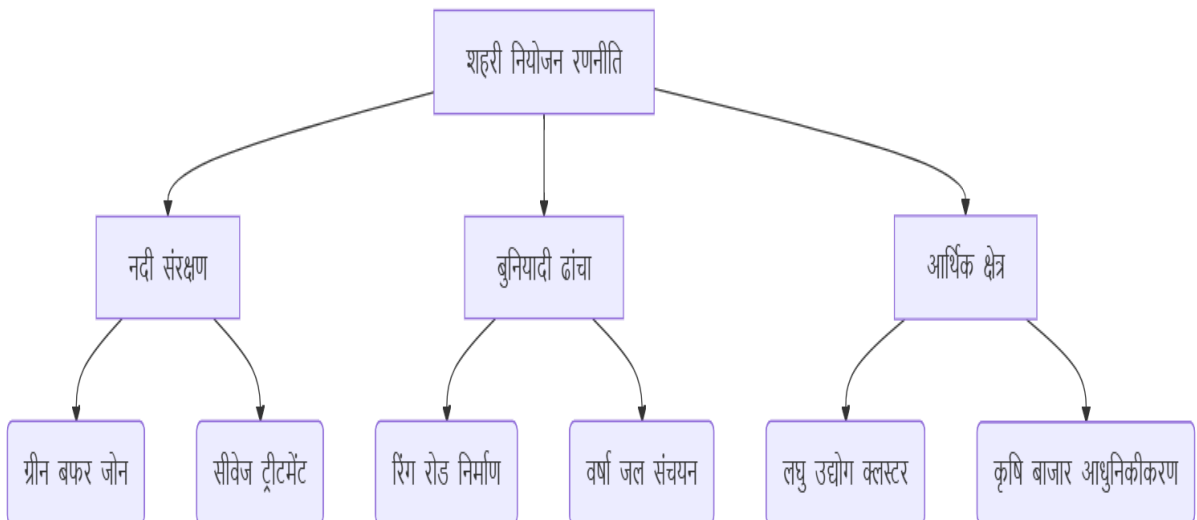
8.2 विकेंद्रीकृत अपशिष्ट प्रबंधन (Decentralized Waste Management)

- एक बड़े STP (सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट) पर निर्भर रहने के बजाय, वार्ड स्तर पर छोटे DEWATS (Decentralized Wastewater Treatment Systems) स्थापित किए जाने चाहिए।

8.3 मिश्रित भूमि उपयोग (Mixed Land Use)

- 'ज़ोनिंग' (Zoning) नियमों को सख्ती से लागू करना ताकि आवासीय और औद्योगिक क्षेत्रों को अलग किया जा सके, लेकिन वाणिज्यिक और आवासीय का मिश्रण (Mixed-use) बनाए रखा जाए ताकि परिवहन की आवश्यकता कम हो।

मॉडल आरेख



9. निष्कर्ष (Conclusion)

अकबरपुर का आकृतिक विकास एक छोटे से नदीय पड़ाव से एक हलचल भरे जिला मुख्यालय तक की यात्रा है। हालाँकि, आंकड़ों से स्पष्ट है कि यह विकास पारिस्थितिक संतुलन की कीमत पर हुआ है। 15.7% निर्मित क्षेत्र में वृद्धि और तमसा नदी में ऑक्सीजन की कमी (DO < 4.0 mg/l) एक आसन्न संकट का संकेत है।

इस शोध पत्र का निष्कर्ष है कि हमें प्राचीन 'नदी-केंद्रित' नियोजन को आधुनिक तकनीक (GIS, STP) के साथ जोड़ना होगा। अकबरपुर को केवल एक प्रशासनिक केंद्र के रूप में नहीं, बल्कि 'तमसा धरोहर शहर' (Tamsa Heritage City) के रूप में पुनर्विकसित करने की आवश्यकता है। यह न केवल अंबेडकर नगर के लिए, बल्कि पूर्वी उत्तर प्रदेश के अन्य छोटे शहरों के लिए भी एक मॉडल बन सकता है।

संदर्भ सूची (References)

1. Bhagat, R. B. (2011). भारत में नगरीकरण का उभरता प्रतिरूप. *Economic and Political Weekly*, 46(34), 10–12. <https://www.epw.in/journal/2011/34>
2. भारत की जनगणना. (2011). जिला जनगणना पुस्तिका: अम्बेडकर नगर, उत्तर प्रदेश. जनगणना संचालनालय, भारत सरकार. <https://censusindia.gov.in>
3. केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड. (2022). उत्तर प्रदेश में प्रदूषित नदी खंडों के पुनर्स्थापन की रिपोर्ट. पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार. <https://cpwb.nic.in>
4. जिला प्रशासन, अम्बेडकर नगर. (2023). जिला सर्वेक्षण रिपोर्ट: अम्बेडकर नगर. उत्तर प्रदेश सरकार. <https://ambedkarnagar.nic.in>
5. Kostof, S. (1991). *The city shaped: Urban patterns and meanings through history*. लंदन: Thames & Hudson.
6. Singh, R. L. (1971). *India: A regional geography*. वाराणसी: National Geographical Society of India.
7. नगर एवं ग्राम नियोजन विभाग, उत्तर प्रदेश. (2015). अकबरपुर मास्टर प्लान-2031. उत्तर प्रदेश सरकार. <https://tcpo.gov.in>
8. Hat, L. S. (1973). *भारत का प्रादेशिक भूगोल*. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस.
9. Chand, M., & Puri, V. K. (2018). *भारत में क्षेत्रीय नियोजन*. नई दिल्ली: Allied Publishers.
10. संयुक्त राष्ट्र. (2019). *विश्व नगरीकरण संभावनाएँ (World Urbanization Prospects)*. संयुक्त राष्ट्र आर्थिक एवं सामाजिक विभाग. <https://population.un.org/wup>
11. आवास एवं शहरी कार्य मंत्रालय. (2021). *भारत में शहरी विकास रिपोर्ट*. भारत सरकार. <https://mohua.gov.in>
12. Sharma, H. S. (2008). *नगरीय भूगोल*. जयपुर: Rawat Publications.
13. Singh, J. (2014). *Urban Geography*. नई दिल्ली: Gyan Publishing House.
14. Singh, S. (2015). *भारत का भूगोल*. इलाहाबाद: प्रयाग पुस्तक भवन.
15. उत्तर प्रदेश योजना विभाग. (2021). *उत्तर प्रदेश आर्थिक सर्वेक्षण*. उत्तर प्रदेश सरकार. <https://updes.up.nic.in>
16. Verma, L. P. (2010). उत्तर प्रदेश में शहरी विकास का भौगोलिक विश्लेषण. *Indian Journal of Regional Science*, 42(2), 67–75.

Cite this Article:

प्रोफेसर डॉ. रीना गुप्ता¹ एवं दिव्या सिंह², “तमसा नदी के तट पर अकबरपुर (अंबेडकर नगर) का आकृतिक विकास: प्राचीन नदीय शहरी सिद्धांतों से आधुनिक सतत शहरी नियोजन तक एक अध्ययन” *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research*, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 03, pp.50-57, March-2026. Journal URL: <https://shikshasamvad.com/>



This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.





CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

प्रोफेसर डॉ. रीना गुप्ता एवं दिव्या सिंह

For publication of research paper title

तमसा नदी के तट पर अकबरपुर (अंबेडकर नगर) का आकृतिक विकास:
प्राचीन नदीय शहरी सिद्धांतों से आधुनिक सतत शहरी नियोजन तक एक
अध्ययन

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed
Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03,
Issue-03, Month March 2026, Impact Factor-RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and
the paper must be available online at: <https://shikshasamvad.com/>